International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 02(II), April - June, 2024, pp. 262-266

दो एवं चतुर्थ वर्षीय बी.एड़. पाठ्यक्रम का अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों की सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. किरण सिडाना*
अनिता पारीक**

सार

सृजनात्मकता एक ऐसी घटना है जिसके द्वारा कुछ नया और मूल्यवान बनाया जाता है। इस तरह से कल्पना की गई अवधारणा किसी भी तरह से खुद को प्रकट कर सकती है, लेकिन अक्सर, वे कुछ ऐसा बन जाते हैं जिसे हम देख सकते हैं इसलिए सृजनात्मकता नए विचारों की कल्पना को प्रेरित करता है और सृजनात्मकता शिक्षण को सीधे आगे बढ़ाता है। पूर्व में राजस्थान व अन्य विश्वविद्यालयों द्वारा 1 वर्ष की प्रशिक्षण अवधि सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा की थी। आज इस अवधि को दो वर्ष एवं चार वर्ष का कर दिया गया है, जिसमे कई बदलाव किये गयें हैं जिससे बीएड पाठ्यक्रम में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की उपादेयता पर प्रश्न चिह्न लग गया हैं। प्रस्तुत शोध पत्र का प्रमुख उददेश्य दो एवं चतुर्थ वर्षीय बी.एड़. पाठ्यक्रम का अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों की सृजनात्मकता पर पडने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना हैं। शोध में मानकीकृत उपकरण प्रयोग किया गया तथा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष में दो एवं चतुर्थ वर्षीय बी.एड़. पाठ्यक्रम का अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों की सृजनात्मकता का मान औसत से अधिक पाया गया तथा दो एवं चतुर्थ वर्षीय बी.एड़. पाठ्यक्रम का अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों की सृजनात्मकता के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

शब्दकोशः *दो एवं चतुर्थ वर्षीय बी.एड़. पाठ्यक्रम, सृजनात्मकता।*

प्रस्तावना

शिक्षा ज्ञान, नैतिकता और मूल्यों के अधिग्रहण की विधि है। इसे मानव में वांछनीय परिवर्तन लाने की प्रक्रिया के रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है। यह मानव की उन्नति का आधार है और व्यक्ति और समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षा की अवधारणा की शुरुआत 1835 में कॉर्ड मैकाले ने की थी। शिक्षा एक लोकतांत्रिक समाज में हर बच्चे का प्राथमिक अधिकार है। शिक्षा को किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए महत्वपूर्ण कारक के रूप में देखा जा सकता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली हर साल कुछ लाखों स्नातकों का उत्पादन करती है। जैसा कि पहले परिभाषित किया गया है, शिक्षा लोगों को ज्ञान, कौशल, अनुशासन, नैतिकता आदि प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षित करने की प्रक्रिया है। प्राचीन गुरुकुलों से लेकर वर्तमान शिक्षा परिदृश्य तक भारतीय शिक्षा प्रणाली में बदलाव आया है, लेकिन दुनिया भर में शीर्ष शैक्षणिक प्रणालियों में से एक होने के लिए अभी भी कुछ बदलाव आवश्यक हैं। भारत में, अधिकांश छात्र सैद्धांतिक ज्ञान की कमी के कारण नहीं बल्कि आवश्यक कौशल की कमी के कारण बेरोजगार हैं। इसके अलावा, भारत में उच्च शिक्षा अधिक संख्या में कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के साथ अधिक ऊंचाइयों पर पहुंच रही है। अधिकांश छात्र उच्च शिक्षा प्राप्त

* प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, श्याम विश्वविद्यालय, लालसोट, जिला दौसा, राजस्थान।
** शोधार्थी, शिक्षा विभाग, श्याम विश्वविद्यालय, लालसोट, जिला दौसा, राजस्थान।

करने के लिए आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन मुख्य दोष यह है कि वर्तमान प्रणाली गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में विफल रही है, भले ही अधिकांश राज्य मुफ्त प्रतिपूर्ति के मामले में स्नातक स्तर के लिए मुफ्त शिक्षा प्रदान कर रहे हैं, लेकिन परिणाम पर ध्यान नहीं दिया गया है। इसका महाविद्यालयों से निकलने वाले छात्रों की गुणवत्ता पर बहुत प्रभाव पड़ेगा जो बदले में उनके करियर को प्रभावित करता है। इसके अलावा, छात्रों को किसी संगठन की जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रशिक्षित नहीं किया जाता है, जिससे अधिकांश स्नातक बेरोजगार हो जाते हैं। संकाय को शोध के क्षेत्रों में छात्रों को प्रोत्साहित करना चाहिए और छात्रों को अनुयायी कौशल के बजाय नेतृत्व कौशल विकसित करना चाहिए। सृजनात्मकताखेल और ऐप से लेकर गानों और व्यावहारिक गतिविधियों तक सशक्त सीखने के अनुभवों को डिजाइन करने में आवश्यक होता जा रहा है, शिक्षक सृजनात्मकता से पढ़ाने और अपने छात्रों को जोड़ने के लिए अभिनव तरीके खोज रहे हैं। सृजनात्मकता सीखने के आवश्यक पहलुओं के बारे में सोचना है– बच्चों को जिन विषयों और कौशलों की आवश्यकता है, उन्हें ध्यान में रखना है। सृजनात्मकता शिक्षकों और छात्रों दोनों को सशक्त महसूस कराता है। शिक्षकों के रूप में यह हमारी मुख्य चुनौती है कि हम अपने छात्रों को जोखिम उठाने, सृजनात्मकता विकसित करने और आत्मविश्वास बनाने के अवसर प्रदान करें। सृजनात्मकता का मतलब है छात्रों को स्वतंत्र रूप से ज्ञान प्राप्त करना और युवा बनना, आजकल लोगों के पास जानकारी प्राप्त करने में मदद करने के लिए सभी संसाधन हैं, उन्हें सूचित करने के लिए शिक्षकों की आवश्यकता नहीं है। सृजनात्मकता एक ऐसी घटना है जिसके द्वारा कुछ नया और मूल्यवान बनाया जाता है। इस तरह से कल्पना की गई अवधारणा किसी भी तरह से खुद को प्रकट कर सकती है, लेकिन अक्सर, वे कुछ ऐसा बन जाते हैं जिसे हम देख सकते हैं इसलिए सृजनात्मकता नए विचारों की कल्पना को प्रेरित करता है और सृजनात्मकता शिक्षण को सीधे आगे बढ़ाता है। शिक्षण के नियोजन कौशल में पाठ के व्यवहार संबंधी उद्देश्यों को तैयार करना, पाठ के लिए संदर्भों की सीमा की पहचान करना, पाठ के तत्वों को तैयार करना, पाठ के कार्यान्वयन के दौरान उपयोग किए जाने वाले शैक्षिक उपकरणों की पहचान करना और इसका मूल्यांकन करने के लिए प्रश्न तैयार करना शामिल है। ये कौशल पाठ के लिए एक प्रभावी योजना की तैयारी के साथ–साथ पाठ कार्यान्वयन, कक्षा पाठ व्यवहार प्रबंधन और कक्षा में मौखिक और गैर–मौखिक बातचीत के कौशल में स्पष्ट हो जाते हैं। सृजनात्मकता कौशल समाज में प्रचलित वातावरण से उभरे हैं और विद्यालय में प्रशासनिक, तकनीकी और भौतिक परिस्थितियों और स्थितियों की उपलब्धता सृजनात्मकता और विद्यालय के पाठ्यक्रम की प्रकृति को प्रोत्साहित करती है। अध्ययन का महत्व शिक्षक राष्ट्र निर्माता हैं; उन्हें अपने प्रशिक्षण से ही शिक्षण के कौशल को विकसित करना चाहिए। भारत में कई शिक्षक प्रशिक्षु वैकल्पिक रूप से बी.एड. में आए हैं। इसलिए सभी के पास बी.एड. प्रशिक्षण की शुरुआत में शिक्षण के प्रति बहुत अच्छा रवैया नहीं था, लेकिन बी. एड. पाठ्यक्रम में उन्हें सूक्ष्म शिक्षण कौशल से लेकर शिक्षण प्रथाओं तक शिक्षण के बुनियादी घटकों के बारे में पता चला। इन आंशिक अनुभवों से प्रत्येक शिक्षक प्रशिक्षु अपने शिक्षण में कुशल बन जाता है। लेकिन बात यह है कि इस 21वीं सदी में एक शिक्षक दूसरों की तुलना में अधिक सृजनात्मक कैसे होगा। यह सृजनात्मकता उनके प्रशिक्षण से स्वयं में विकसित होनी चाहिए। यदि उन्हें विषय और शिक्षण पसंद है तो उनके दिमाग में अपने आप नई चीजें आती हैं। यहां तक कि कई मनोवैज्ञानिक पहलू उनकी शिक्षण शैली और सृजनात्मकता के तरीके पर भी प्रभाव डालेंगे। यहां तक कि सृजनात्मकता के प्रति दृष्टिकोण की धारणाएं बी.एड के दोनों पाठ्यक्रमों में अलग–अलग हो सकती हैं क्योंकि दोनों वर्षों में अधिक प्रशिक्षण और कम प्रशिक्षण होता है। इसलिए इस वर्तमान अध्ययन में शोधकर्ता दो एवं चतुर्थ वर्षीय बी.एड़. पाठ्यक्रम का अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों की सृजनात्मकता पर पडने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन के बारे में अध्ययन करने जा रहे हैं।

शोधकर्ता के मन मे इन दोनों पाठ्यक्रमों को लेकर अनेक प्रश्न उत्पन्न हुए, इन दोनों पाठ्यक्रमों में क्या अन्तर हैं? इन दोनों पाठ्यक्रमों में अधिगम की प्रक्रिया किस प्रकार की हैं? इन दोनों पाठ्यक्रमों में से किस पाठ्यक्रम के अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों में सृजनात्मकता अधिक हैं? उन सभी प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के लिए शोधकर्ता ने प्रस्तुत शीर्षक दो एवं चतुर्थ वर्षीय बी.एड़. पाठ्यक्रम का अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों की सृजनात्मकता पर पडने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन पर कार्य करने का निर्णय लिया।

समस्या कथन

'' दो एवं चतुर्थ वर्षीय बी.एड़. पाठ्यक्रम का अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों की सृजनात्मकता पर पडने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन पर कार्य करने का निर्णय लिया।''

समस्या का औचित्य

शिक्षक शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण स्थान रखता है, जिसके हाथों में विद्यार्थियों को आकार देने का कार्य निहित होता है। शिक्षक शिक्षण संस्थान की धुरी होने के कारण शिक्षा प्रणाली की कुंजी प्रदान करता है। प्रभावी शिक्षक होने के लिए उसे सृजनात्मक और लोकतांत्रिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। एक सृजनात्मक शिक्षक एक स्वीकार्य, सहनशील और मानवतावादी होता है जो विद्यार्थियों को अपना अधिकतम विकास करने की अनुमति देता है। ऐसा शिक्षक बच्चों को आरंभिक सीखने और सोचने का श्रेय देकर और सृजनात्मक समस्या समाधान गतिविधियों के माध्यम से उन्हें सीखने की अनुमति देकर उनकी मौलिकता का प्रतिनिधित्व करता है। शिक्षक प्रशिक्षु भावी पीढ़ी के शिक्षक होंगे। राष्ट्र की प्रगति और समृद्धि भावी पीढ़ी पर निर्भर करती है। शिक्षक प्रशिक्षुओं को यह पहचानने के लिए सुसज्जित किया जाना चाहिए कि बच्चों में पेशेवर रूप से रुचि और प्रतिभा के विशेष संसाधन होते हैं। इसके लिए बच्चों में सृजनात्मक व्यवहार को बढ़ावा देने वाले ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण के अधिग्रहण और अनुप्रयोग की आवश्यकता होगी। उनकी सृजनात्मकता का उपयोग सीखने और सिखाने में सुधार के लिए एक केंद्रीय शक्ति के रूप में किया जाता है। चूंकि शिक्षण और सीखना दोनों ही महत्वपूर्ण हैं और आपस में जुड़े हुए हैं, इसलिए सृजनात्मक शिक्षकों का प्रदर्शन सृजनात्मक सीखने को प्रोत्साहित करता है, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षक और छात्र दोनों ही सृजनात्मकता की संभावनाओं का विस्तार करते हैं। सृजनात्मक व्यवहार और सृजनात्मक शिक्षण कौशल की सामान्य समझ वाले शिक्षक प्रशिक्षु प्रत्येक बच्चे को सृजनात्मक रूप से सीखने, बढ़ने और जीने के अवसर प्रदान करेंगे। यूजीन (1961) ने पता लगाया कि सृजनात्मकता जिसे सृजनात्मकता परीक्षणों द्वारा मापा जाता है, वह शिक्षकों द्वारा मूल्यांकन की जाने वाली सृजनात्मकता बुद्धि से संबंधित है। इस विषय पर शोधकर्ता द्वारा देखने पर पाया गया कि शोध कार्य न्यून है। माध्यमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में ऐसे शोध कार्य नहीं है, दो एवं चतुर्थ वर्षीय बी.एड़. पाठ्यक्रम का अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों की व्यावयसायिक कुशलता पर पडने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया गया हो, अतः शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शीर्षक दो एवं चतुर्थ वर्षीय बी.एड़. पाठ्यक्रम का अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों की सृजनात्मकता पर पडने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन पर कार्य करने का निर्णय लिया।

शोध के उद्देश्य

- दो एवं चतुर्थ वर्षीय बी.एड़. पाठ्यक्रम का अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों की सृजनात्मकता के सन्दर्भ में अध्ययन करना।
- दो एवं चतुर्थ वर्षीय बी.एड़. पाठ्यक्रम का अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों की सृजनात्मकता पर पडने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनायें

- दो एवं चतुर्थ वर्षीय बी.एड़. पाठ्यक्रम का अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों की सृजनात्मकता का मान औसत स्तर का होता हैं।
- दो एवं चतुर्थ वर्षीय बी.एड़. पाठ्यक्रम का अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों की सृजनात्मकता के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता हैं।

जनसंख्या

प्रस्तावित शोध में राजस्थान के म.द.स. विश्वविद्यालय,अजमेर से सम्बद्धता प्राप्त टोंक जिले के 10 महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया हैं।

न्यादर्श

प्रस्तावित शोध में शोधकर्ता द्वारा सुविधानुसार म.द.स. विश्वविद्यालय,अजमेर से सम्बधता प्राप्त टोंक जिले के महाविद्यालयों के 500 प्रशिक्षणार्थियों में सम्मिलित किया गया है।

विश्वविद्यालय	टोंक जिले के महाविद्यालय	कुल प्रशिक्षणाथी	दो वर्षीय बी.एड़. पाठ्यक्रम	चतुर्थ वर्षीय बी. एड़. पाठ्यक्रम
म.द.स. विश्वविद्यालय, अजमेर	10	500	250	250

शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध में निम्न उपकरण प्रयोग किये गये

- शिक्षक गुणों की सृजनात्मकता को वर्तमान में प्रोफेसर ए. वेंकटरामी रेड्डी द्वारा तैयार और मानकीकृत तेलुगु संस्करण में आयोजित सृजनात्मकता परीक्षणों की एक श्रृंखला की मदद से मापा गया। ये परीक्षण गिलफोर्ड (1962), गैट्ज़ेल्स और जैक्सन (1962), टोरेंस (1962) और वॉलैच और कोगन (1965) के परीक्षणों के अनुरूप विकसित किए गए थे। सृजनात्मकता परीक्षण की बैटरी में छह गतिविधियाँ शामिल हैं। चार गतिविधियाँ मौखिक सृजनात्मकता से संबंधित हैं और शेष दो गतिविधियाँ गैर–मौखिक सृजनात्मकता से संबंधित हैं।

शोध में प्रयुक्त शोध विधि

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

शोध में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या :–

- **दो एवं चतुर्थ वर्षीय बी.एड़. पाठ्यक्रमः–** दो एवं चतुर्थ वर्षीय बी.एड़. पाठ्यक्रम से तात्पर्य दो एवं चतुर्थ वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम के लिए पाठ्यक्रम से है, जिसे एनसीईटी ने जून 2015 से प्रभावी रूप से अपनाया है।
- **सृजनात्मकता :–** सृजनात्मकता दर्शन से लेकर पेंटिंग, संगीत से लेकर किसी भी तथ्य तक नए या सामाजिक रूप से मूल्यवान विचारों या वस्तुओं का निर्माण करने की क्षमता है। सृजनात्मक लोग समस्या खोजने वाले होने के साथ–साथ समस्या हल करने वाले भी होते हैं। जितने अधिक सृजनात्मक लोग होते हैं, उतना ही वे अपने लिए निर्धारित समस्याओं पर काम करना पसंद करते हैं। सृजनात्मकता किसी ऐसी चीज़ का निर्माण करने की प्रक्रिया है जो मौलिक और मूल्यवान दोनों हो। यह चीज़ कोई सिद्धांत, नृत्य, रसायन, प्रक्रिया या लगभग कुछ भी हो सकती है। वे व्यक्ति जो प्रवाह, मौलिकता, अनुकूली और सहज लचीलापन रखते हैं और तार्किक मूल्यांकन करने और ऐसी नई चीज़ बनाने की क्षमता रखते हैं जो पहले उनके लिए अज्ञात थी, उन्हें सृजनात्मकता की उच्च क्षमता वाले लोगों के रूप में लेबल किया जाता है।
- **प्रशिक्षणार्थीः–** शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान या शिक्षा महाविद्यालय में नामांकित व्यक्ति। जिसे वास्तविक स्कूल की स्थिति में नियमित शिक्षक की तरह प्रशिक्षण लेने के लिए नियुक्त किया गया है (गुड, 1973)। विशेष रूप से वह माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक जो "दो वर्षीय बैचलर ऑफ एजुकेशन (बी. एड) "एवं चार वर्षीय बैचलर ऑफ एजुकेशन (बी.एड)" सेवा–पूर्व शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से तैयार होते हैं एवं प्रशिक्षण ले रहें हो।

शोध का परिसीमन

समस्या का स्वरूप स्वयं में साधारणतः व्यापक होता है अतः समस्या का व्यवहारिक रूप में अध्ययन करने के लिये उसके लिये सीमांकन आवश्यक होता है।

- प्रस्तावित शोध में राजस्थान राज्य के म.द.स. विश्वविद्यालय, अजमेर से सम्बद्धता प्राप्त टोंक जिले के महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों को शामिल किया गया हैं।
- प्रस्तावित शोध में सह–शैक्षिक, समलिंगीय दोनों प्रकार के म.द.स. विश्वविद्यालय, अजमेर से संबंद्ध बी. एड. संसथानों को शामिल किया गया है।
- प्रस्तावित शोध में मात्र बी.एड को अध्ययन कराने वाले प्रशिक्षकों को शाामिल किया गया हैं।

प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तावित शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा टी परीक्षण का सांख्यिकी के रूप में प्रयोग किया जायेगा।

शोध निष्कर्ष

- शोध की परिकल्पना संख्या 1 अस्वीकृत की जाती है, जिसके अनुसार दो एवं चतुर्थ वर्षीय बी.एड़. पाठ्यक्रम का अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों की सृजनात्मकता का मान औसत स्तर का होता हैं।
- शोध की परिकल्पना संख्या 2 स्वीकृत की जाती है, जिसके अनुसार दो एवं चतुर्थ वर्षीय बी.एड़. पाठ्यक्रम का अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों की सृजनात्मकता के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अबरा जॉक, सी. और वैलेटिन, सी. 1991: रचनात्मकता में लिंग अंतर उपलब्धियां: स्पष्टीकरणों का एक सर्वेक्षण, आनुवंशिक, सामाजिक और सामान्य मनोविज्ञान, मोनोग्राफ, खंड 1 17, संख्या 3.
2. अग्रवाल, के.पी. 1988: माध्यमिक स्तर पर रचनात्मकता के पूर्वानुमान के रूप में स्कूलों के प्रकार और संबंधित कारक, पीएच.डी. शिक्षा। जर्मिया मिलिया इस्लामिया, शैक्षिक अनुसंधान का पांचवां सर्वेक्षण, एनसीईआरटी, नई दिल्ली।
3. अग्रवाल, एम. 2009: पेशे के रूप में शिक्षण के चयन में प्रेरक कारक और कुछ चर के साथ इसका संबंध। जर्नल ऑफ
4. एजुकेशनल रिसर्च, वॉल्यूम 1.96, नंबर 4. पृष्ठ 13–16 अग्रवाल, जे.सी. (1972) ''स्कूल मैनेजमेंट एण्ड इनफॉर्मेशन एण्ड कम्यूनिकशन टेक्नोलॉजी'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
5. अग्रवाल, जे.सी. (1972) ''एजूकेशनल रिसर्च एन इन्ट्रोडक्शन'', आर्य बुक डिपो, न्यू देहली.
6. बेस्ट, जॉन. डब्ल्यू(1977)''रिसर्च इन एजूकेशन'', एंगलवुड क्लिफ्ट, न्यू जर्सी प्रेन्टिसहॉल, 403.
7. भट्टाचार्य, एस. (1968) ''फन्डामेन्टल्स ऑफ एजूकेशन एण्ड एजूकेशनल रिसर्च'', बडौदा, आचार्य बुक डिपो बडौदा–पेज नं. 384.

❖◆❖